Emerging Trends in Education [Vol. XI - No. 1 & 2. Feb. & August, 2024. pp 67-78]

विकसित भारत @ 2047, युवा एवं स्वामी विवेकानन्द

डॉ स्मिता*

शोध सारांश

'विकसित भारत/2047' भारत सरकार का विजन है जिसका लक्ष्य 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है, जो कि इसकी स्वतंत्रता का 100वाँ वर्ष होगा। इस विजन में आर्थिक संवृद्धि, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलू शामिल हैं। इस विजन को संबल प्रदान करने में 19वीं सदी के महामानव भारतीय दार्शनिक, आध्यात्मिक नेता, महान विचारक और युवाओं के महान संरक्षक स्वामी विवेकानंद की युवाओं के प्रति वैचारिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को भारत और दुनिया के उत्थान के पीछे प्रेरक शक्ति के रूप में पहचाना है। उनका मानना था कि युवाओं के भीतर छिपी अदृश्य शक्ति का उपयोग किया जाए और उसे महान आदर्शों की ओर निर्देशित किया जाए, तो समाज में आमूल चूल परिवर्तन आ सकता है। स्वामी जी ने युवाओं में चरित्र निर्माण, नैतिक अखंडता और आत्मविश्वास की मजबूत भावना के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने उन्हें आधुनिक शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया, एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की, जो न केवल ज्ञान प्रदान करे बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के साथ कर्तव्य और आत्मनिर्भरता की भावना को भी बढ़ावा दे।

प्रस्तावना

''राष्ट्रीय युवा दिवस'' प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी को महान आध्यत्मिक योगी, महामानव, दार्शनिक और विचारक स्वामी विवेकानन्द की स्मृति में मनाया जाता है जिनका युवाओं की क्षमता में अटूट विश्वास है। उनका प्रेरणादायी जीवन और सशक्त संदेश युवाओं से अपने सपनों को संजोने, अपनी ऊर्जा को उजागर करने और उनके कल्पित आदर्शों के अनुरूप भविष्य को आकार देने का आग्रह करता है। भारत सरकार द्वारा युवाओं को 15 वर्ष से 29 वर्ष के आयु वर्ग के रूप में परिभाषित किया गया है, जो भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत से अधिक है। समाज के सबसे जीवंत और गतिशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला यह समूह देश का सबसे मूल्यवान मानव संसाधन है। युवा अपनी असीमित क्षमता के साथ भारत को प्रगति एवं नवाचार की नित्य नयी ऊँचाइयों पर ले जाने की क्षमता रखते है। राष्ट्रीय युवा दिवस इस क्षमता को स्वीकार करने उत्सव मनाने और प्रयोग करने का महत्वपूर्ण क्षण है, जो युवाओं को देश के विकास में सार्थक एंव बहुमूल्य योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

* सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया।

इस संदर्भ में 40वें राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लिखा कि "स्वामी विवेकानन्द भारत के युवाओं को गौरवशाली अतीत और भव्य भविष्य की मजबूत कड़ी के रूप में देखते थे। स्वामी विवेकानन्द कहते थे कि सारी शक्ति तुम्हारे भीतर है, उस शक्ति का आह्वान करो। आपको विश्वास होना चाहिए कि आप सब कुछ कर सकते है। स्वयं पर यह विश्वास और असम्भव को सम्भव बदलना आज भी देश के युवाओं के लिए प्रासंगिक है, और मुझे खुशी है कि भारत का युवा इस बात को भली–भाँति समझता है। युवा आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है।"

वस्तुतः संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णयानुसार सन् 1984 को **''अन्तरराष्ट्रीय युवा वर्ष"** घोषित किया गया। इसके महत्व पर विचार करते हुए भारत सरकार ने घोषणा की कि सन् 1984 से 12 जनवरी यानी स्वामी विवेकानन्द जयन्ती का दिन **''राष्ट्रीय युवा दिवस"** के रूप में देश भर में सर्वत्र मनाया जायेगा। इस संदर्भ में भारत सरकार का विचार था कि–

''ऐसा अनुभव होता है कि स्वामी जी का दर्शन एवं उनका जीवन तथा किसी कार्य में निहित उनका आदर्श भारतीय युवकों के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा स्त्रोत हो सकता है। स्वामी जी की इसी महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए 12 जनवरी को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस मनाने का निर्णय लिया गया है।"

एक अन्य तथ्य की ओर भी आप सभी का ध्यान आकृष्ट कराना चाहेंगे कि राष्ट्रीय युवा दिवस प्रत्येक वर्ष एक विशेष विषय (Theme) पर आधारित होता है, जो युवाओं को प्रेरणा देने के साथ राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य का निर्धारण भी करता है। विगत कुछ वर्षों की विषय को इस प्रकार देखा जा सकता है–

- ➢ 2024 का विषय 'एक सतत भविष्य के लिए युवा'
- ➢ 2023 का विषय 'विकसित युवा विकसित भारत'
- ➢ 2022 का विषय 'यह सब मन में है'
- ➢ 2021 का विषय 'युवा उत्साह नए भारत का'
- ➢ 2020 का विषय 'राष्ट्र निर्माण के लिए युवा शक्ति का उपयोग'

इस प्रकार स्पष्ट है कि **'राष्ट्रीय युवा दिवस'** को मनाने का मुख्य लक्ष्य भारत के युवाओं के बीच स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों एवं विचारो के महत्व को प्रसारित करना हैं और भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिये उनके बड़े प्रयासों के साथ ही युवाओं के अनन्त ऊर्जा को जागृत करने के लिये यह बहुत अच्छा तरीका है।

स्वामी विवेकानन्द : एक संक्षिप्त जीवन परिचय

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनका असली नाम

नरेन्द्रनाथ दत्त था। वे एक समृद्ध और शिक्षित परिवार में पैदा हुए थे, जिसके कारण उन्हें बचपन से ही अच्छे संस्कार और शिक्षा प्राप्त हुई। उनके पिता, विश्वनाथ दत्त, एक प्रतिष्ठित वकील थे और मां भुवनेश्वरी देवी एक धार्मिक और अत्यंत सरल स्वभाव की महिला थीं। स्वामी विवेकानंद का पालन–पोषण एक ऐसे वातावरण में हुआ, जो धार्मिकता, आध्यात्म, और उच्च संस्कारों से भरा हुआ था। उनके माता–पिता ने उन्हें बहुत अच्छे संस्कार दिए और छोटी उम्र में ही स्वामी विवेकानंद में गहरी धार्मिक भावना और अध्ययन की इच्छा देखने को मिली।

स्वामी विवेकानंद की प्रारंभिक शिक्षा कलकत्ता के ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के मेट्रोपोलियन इंस्टियूशन से शुरू हुई, जहां उनकी शिक्षा का आधार मजबूत हुआ। वे एक मेधावी छात्र थे, और वे विद्यालय में हर विषय में उत्कृष्टता प्राप्त की। वे विशेष रूप से इतिहास, संस्कृत और दर्शनशास्त्र में रुचि रखते थे। उनकी धार्मिकता के प्रति रुचि और ज्ञान की प्यास इतनी गहरी थी कि वे अक्सर अपने गुरु से या अपने साथियों से जीवन के गूढ़ रहस्यों के बारे में सवाल पूछा करते थे। उनकी इसी जिज्ञासा ने उन्हें जल्द ही एक खोजी और ज्ञानवर्धक मार्ग पर ले जाने का कार्य किया।

स्वामी विवेकानंद का मननशील और विचारशील स्वभाव उन्हें सामान्य बच्चों से अलग करता था। वे एक समय में दो अलग–अलग तरह की मानसिकता रखते थे, एक तरफ वे धार्मिक गुरुओं की शिक्षाओं को गहराई से समझने की कोशिश करते थे, तो दूसरी ओर वे पश्चिमी विचारधारा और विज्ञान के प्रति भी गहरी रुचि रखते थे। जब वे रामकृष्ण परमहंस से मिले, तब उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस से शिक्षा ली और उनके दर्शन को आत्मसात किया। यही वह समय था जब वे अपने जीवन के उद्देश्य और मार्ग पर स्पष्ट रूप से अग्रसर हुए।

स्वामी विवेकानंद के बचपन और युवावस्था में ही उनके मन में भारतीय संस्कृति और समाज की बेहतरी के लिए एक जुनून और प्रतिबद्धता पैदा हो गई थी। उन्होंने अपने जीवन के पहले दिनों में ही समाज में व्याप्त अंधविश्वास, भेदभाव और सामाजिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाना शुरू कर दिया था। उनका यह मानना था कि भारतीय समाज को पुनः जागृत करने और उसे अपनी पुरानी महानता की ओर वापस लौटने की जरूरत है।

25 वर्ष की अवस्था में नरेंन्द्र दत्त ने गेरूआ वस्त्र पहन लिए। तत्पश्चात उन्होंने पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। सन् 1983 में शिकागो (अमेरिका) के विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द भारत के प्रतिनिधि के रूप में पहुंचे। यूरोप–अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। वहां लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानन्द को सर्वधर्म परिषद् में बोलने का समय ही न मिले परन्तु एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला किंतु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए। मात्र यह पाँच शब्द 'मेरे अमेरिकावासी बहनों तथा भाइयों' कहकर स्वामी जी ने जब अपना उद्‌बोधन

प्रारम्भ किया तब विश्व धर्म महासभा का वह हॉल तालियों से गूँज उठा तथा भारत की आध्यात्मिक शक्ति से पूरा विश्व परिचित हुआ। फिर तो अमेरिका में उनका बहुत स्वागत हुआ। वहां इनके भक्तों का एक बड़ा समुदाय निर्मित हो गया। तीन वर्ष तक वे अमेरिका रहे और वहां के लोगों को भारतीय तत्वज्ञान की अद्‌भुत ज्योति प्रदान करते रहे।

'अध्यात्म – विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जायेगा' यह स्वामी विवेकानन्द का दृढ़ विश्वास था। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएं स्थापित कीं। अनेक अमेरिकन विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। वे सदा अपने को गरीबों का सेवक कहते थे। भारत के गौरव को देशदेशान्तरों में उज्ज्वल करने का उन्होंने सदा प्रयत्न किया। 4 जुलाई सन् 1902 को स्वामी जी का देहावसान हो गया।

स्वामी विवेकानन्द अपने शब्द ज्ञान और जीवन के व्यावहारिक पाठों से इतने समृद्ध थे कि प्रसिद्ध विद्वान और नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक बार कहा था 'यदि आप भारत को जानना चाहते हैं, तो विवेकानन्द का अध्ययन करें, उनमें सब कुछ सकारात्मक है और कुछ भी नकारात्मक नहीं है।'

इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद का प्रारंभिक जीवन ज्ञान की खोज, समाज के प्रति संवेदनशीलता और उच्च आदर्शों की ओर एक यात्रा के रूप में विकसित हुआ, जो उनके बाद के जीवन में व्यापक रूप से परिलक्षित हुआ। स्वामी विवेकानंद को भारत के महान आध्यात्मिक गुरु और विचारक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने युवाओं को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित किया। विवेकानंद के विचार और आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं और लाखों युवाओं को दिशा देते हैं।

स्वामी विवेकानन्द द्वारा लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

- Karma Yoga (1896)
- Raja Yoga (1896)
- Vedanta Philosophy:An address before the Graduate Philosophical Society (1896)
- Lectures from Colombo toAlmora (1897)
- Gyan Yog 1899
- Vedanta philosophoy: lectures on Jnana Yoga (1902)

स्वामी विवेकानंद के कुछ महत्वपूर्ण विचार–

- 'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।'
- 'जब तक तुम खुद पर विश्वास नहीं करोगे, तब तक तुम कुछ नहीं कर सकते।'
- 'युवाओं में लोहे जैसी मांसपेशियां और फौलादी नसें हैं, जिनका हृदय वज्र तुल्य संकल्पित

है।'

- 'सबसे बड़ा धर्म है अपने स्वभाव के प्रति सच्चा होना।'
- 'जो कुछ भी तुम्हारे लिए बेहतर है, उसके लिए हमेशा काम करो।'
- 'जीवन बहुत छोटा है, लेकिन आत्मा अजर अमर है।'
- 'समाज के सबसे कमजोर तबके की सेवा करो।'
- 'जिस काम का संकल्प करो, उस काम को उसी समय पूरा करो।'

वास्तव में स्वामी विवेकानन्द आधुनिक मानव के आदर्श प्रतिनिधि हैं। विशेषकर भारतीय युवकों के लिए स्वामी विवेकानन्द से बढ़कर दूसरा कोई नेता नहीं हो सकता। इन्होंने हमें कुछ ऐसा संचार भर देने वाला संदेश दिया है जो हममें अपने उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त परम्परा के प्रति एक प्रकार का अभिमान जगा देता है। स्वामी जी ने जो कुछ भी लिखा है वह हमारे लिये हितकर है तथा वह आने वाले लम्बे समय तक हमें प्रभावित करता रहेगा। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उन्होंने वर्तमान भारत को दृढ़ रूप से प्रभावित किया है। भारत की युवा पीढ़ी स्वामी विवेकानन्द से निःसृत होने वाले ज्ञान, प्रेरणा एवं तेज के स्त्रोत से लाभ उठा सकती है।

स्वामी विवेकानन्द जी का युवाओं को संदेश

स्वामी विवेकानन्द का नाम आते ही एक ऐसे तेजस्वी युवा सन्यासी की छवि मन में उभरती है जो न केवल ज्ञान के अथाह भंडार थे, बल्कि वे महान देशभक्त भी थे। उन्होंने भारत को ही अपनी माँ समझा था और इसी के उत्थान के लिए जीवन भर प्रयत्नशील रहे। स्वामी जी ने 11 सितम्बर 1893 को अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्वधर्म सम्मेलन में भारत की विजय पताका फहराई और यह सिद्ध किया कि विश्व में अगर कोई देश विश्वगुरू है, तो वह भारत ही है। उन्होंने वेदों की आधुनिक संदर्भ में व्याख्या की और उनके व्याख्यान आज भी निराश लोगों के दिलों में नई ऊर्जा भर देते हैं। मेरा मानना है कि युवा शक्ति देश और समाज की रीढ़ होती है। युवा देश और समाज को नए शिखर पर ले जाते हैं। युवा देश का वर्ममान हैं, तो भूतकाल और भविष्य के सेतु भी हैं। युवा देश और समाज के जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। युवा गहन ऊर्जा और उच्च महत्वाकांक्षाओं से भरे हुए होते हैं। उनकी आंखों में भविष्य के इंद्रधनुषी स्वप्न होते हैं। समाज को बेहतर बनाने और राष्ट्र के निर्माण में सर्वाधिक योगदान युवाओं का ही होता है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं ने अपनी शक्ति का परिचय दिया था। परन्तु देखने में आ रहा है कि युवाओं में नकारात्मकता जन्म ले रही है। उनमें धैर्य की कमी है। वे हर वस्तु अति शीघ्र प्राप्त कर लेना चाहते हैं। वे आगे बढ़ने के लिए कठिन परिश्रम की बजाए लघुमार्ग खोजते हैं। भोग विलास और आधुनिकता की चकाचौंध उन्हें प्रभावित करती है। उच्च पद, धन–दौलत और ऐश्वर्य का जीवन उनके आदर्श बन गए हैं। अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में जब वे असफल हो जाते हैं, तो उनमें चिड़चिड़ापन आ जाता है। कई बार वे मानसिक तनाव का भी शिकार हो जाते

हैं युवाओं की इस नकारात्मकता को सकारत्मकता में परिवर्तित करना होगा। उन्हें स्वामी विवेकानन्द से प्रेरणा लेनी होगी।

स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं का आह्वान करते हुए कठोपनिषद का एक मंत्र कहा था– **'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।'** अर्थात उठो, जागो और तब तक मत रूको, जब तक कि अपने लक्ष्य तक न पहुंच जाओ।

स्वामी विवेकानन्द का कहना है कि बहती हुई नदी की धारा ही स्वच्छ, निर्मल तथा स्वास्थ्यप्रद रहती है। उसकी गति अवरूद्ध हो जाने पर उसका जल दूषित व अस्वास्थ्यकर हो जाता है। नदी यदि समुद्र की ओर चलते–चलते बीच में ही अपनी गति खो बैठे, तो वह वहीं पर आबद्ध हो जाती है। प्रकृति के समान ही मानव समाज में भी एक सुनिश्चित लक्ष्य के अभाव में राष्ट्र की प्रगति रूक जाती है और सामने यदि स्थिर लक्ष्य हो, तो आगे बढ़ने का प्रयास सफल तथा सार्थक होता है। हमारे आज के जीवन के हर क्षेत्र में यह बात स्मरणीय है। विशेषकर आज के युवा वर्ग को, जिसमें देश का भविष्य निहित है और जिसमें जागरण के चिह्न दिखाई दे रहे हैं, हमें अपने जीवन का एक उद्देश्य ढूँढ लेना चाहिए। हमें ऐसा प्रयास करना होगा ताकि हमारे भीतर जगी हुई प्रेरणा तथा उत्साह ठीक पथ पर संचालित हो। अन्यथा शक्ति का ऐसा अपव्यय या दुरूपयोग हो सकता है कि जिससे मनुष्य की भलाई के स्थान पर बुराई ही होगी।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि "भौतिक उन्नति तथा प्रगति अवश्य ही वांछनीय है, परन्तु देश जिस अतीत से भविष्य की ओर अग्रसर हो रहा है, उस अतीत को अस्वीकार करना निश्चय ही निर्बुद्धिता का द्योतक है। अतीत की नींव पर ही राष्ट्र का निर्माण करना होगा। युवा वर्ग में यदि अपने विगत इतिहास के प्रति कोई चेतना न हो, तो उनकी दशा प्रवाह में पड़े एक पतवार विहीन नाव के समान होगी। ऐसी नाव कभी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचती।" इस महत्वपूर्ण बात को सदैव स्मरण रखना होगा।

स्वामी जी ने कहा है कि "मान लो हम लोग आगे बढ़ते जा रहे हैं, पर यदि हम किसी निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर नहीं जा रहे हैं, तो हमारी प्रगति निष्फल रहेगी। आधुनिकता कभी – कभी हमारे समक्ष चुनौती के रूप में आ खड़ी होती है। इसलिए भी यह बात हमें विशेष रूप से याद रखनी होगी। इसी उपाय से आधुनिकता के प्रति वर्तमान झुकाव को देश के भविष्य के लिए उपयोगी एक लक्ष्य की ओर सुपरिचालित किया जा सकता है।"

स्वामी जी ने बताया है कि उन्नति की प्रथम सीढ़ी स्वाधीनता है। स्वाधीनता के अभाव में हम बद्ध हो जाते हैं और इससे क्रमशः हमारा विनाश अवश्यंभावी हो जाता है। इसीलिए युवकों को पूर्ण स्वाधीनता देनी होगी, उनके पथ निर्धारण में सहायता भी करनी होगी। स्वामी जी सर्वप्रथम युवाओं को उनके यथार्थ स्वरूप का परिचय करवाते हैं। उनकी विराट आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का परिचय देते हुए स्वामी जी ओजस्वी शब्दों में कहते हैं– "हे युवाओं! तुम सर्वशक्तिमान की सन्तानें हों। तुम अनन्त दिव्य अग्नि की चिंगारिया हो।" इस आध्यात्मिक परिचय के साथ ही वे युवाओं

का जीवन लक्ष्य स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि हर आत्मा मूल रूप में देवस्वरूप है और लक्ष्य इस दिव्यता को जगाना है। इस तरह स्वामी जी मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को जाग्रत करने और जीवन के हर क्षेत्र में इसकी अभिव्यक्ति को सर्वोच्च लक्ष्य घोषित करते हैं।

लक्ष्य के एक बार निर्धारित होते ही फिर इसके अनुरूप युवाओं के जीवन का गठन शुरू हो जाता है। स्वामी जी के अनुसार – लक्ष्य के अभाव में हमारी 99 प्रतिशत शक्तियाँ इधर–उधर बिखर कर नष्ट होती रहती है। आध्यात्मिक आदर्श के अभाव में हम अपनी अन्तर्निहित दिव्यता एवं पूर्णता को भुलाकर देह–मन तक ही अपना परिचय मान बैठते हैं और हमारे समस्त दुःख, कष्टों और विषाद का मूल कारण यह आत्म विस्मृति ही है। स्वामी जी के शब्दों में – "यह अज्ञान ही सब दुख – बुराइयों की जड़ है। इसी कारण हम स्वयं को पापी, दीन–हीन और दुष्ट–दरिद्र मान बैठे हैं और दूसरों के प्रति भी ऐसी ही धारणाएं रखते हैं तथा इसका एकमात्र समाधान अपनी दिव्य प्रकृति एवं आत्मशक्ति का जागरण है। वह जोर देते हुए कहते हैं कि आध्यात्मिक और मात्र आध्यात्मिक ज्ञान ही हमारे दुखों मुसीबतों को सदैव के लिए समाप्त कर सकता है।"

इस तरह युवाओं के आध्यात्मिक पथ का निर्देशन करते हुए स्वामी जी कहते हैं कि "जब समस्त शक्ति, समस्त समस्याओं के समाधान का स्त्रोत तुम्हारे अन्दर विद्यमान है, तो फिर सुख भोगों और उपलब्धियों के पीछे यह अन्तहीन भटकाव कैसा ? कोल्हू के बैल की तरह न जाने तुम कितने जन्मों से इसी तरह बिना कुछ पाये भटक रहे हो और इन्द्रिय सुख एवं भोगों की इस अन्धी दौड़ का कोई अन्त भी नहीं। अस्तित्व की पूरी आहुति देने पर भी यह आग संतुष्ट होने वाली नहीं।"

युवाओं की इस अंतहीन भटकन को हृदय की गहराई से अनुभव करते हुए स्वामी जी अपने अमृत वचनों द्वारा थके–हारे संतप्त युवा मन में शक्ति का संचार करते हैं और वे कहते हैं – "मैं जानता हूँ मार्ग बहुत कठिन है, किन्तु यदि तुम्हारे अन्दर आदर्श की अग्नि प्रदीप्त है तो चिंता की कोई बात नहीं। ऐसे में मार्ग की असफलताएँ ! इनकी परवाह मत करो। अरे! वे तो स्वाभाविक हैं और वे तो जीवन का सौन्दर्य हैं। जीवन के इस संग्राम में धूल–मिट्टी का उड़ना तो स्वाभाविक ही है और जो इस धूल को सहन नहीं कर सकता, वह आगे कैसे बढ़ सकेगा। ये असफलताएँ तो सफलता के मार्ग की अनिवार्य सीढ़ियाँ हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति आदर्श के साथ एक हजार गलतियाँ करेगा तो बिना आदर्श के वह पचास हजार गलतियाँ करेगा। इसलिए जीवन में आदर्श का होना आवश्यक है। अतः जीवन का आदर्श कभी मत छोड़ना" एक जगह तो स्वामी जी यहाँ तक कहते हैं कि गलत रास्ते पर तेजी से बढ़ने की बजाय अच्छे मार्ग पर डटे रहकर खड़े होना भी पर्याप्त है।

इसी क्रम में स्वामी जी युवाओं को जागृत करते हुए कहते हैं – "तुम अपने दोषों एवं गलतियों के लिए दूसरों को दोष क्यों देते हो? जो तुमने बोया था, वही तो काट रहे हो। इसलिए भाग्य को क्या दोष दें ? दूसरों पर दोषारोपण हमें दुर्बल और सिर्फ दुर्बल ही बनाता है। अतः किसी को

अपनी दुर्बलता के लिए दोष मत दो। सारी जिम्मेदारी अपने कन्धे पर लो। कहो – यह जो कष्ट मैं झेल रहा हूँ यह मेरा रचा हुआ है। इसका अर्थ हुआ कि इसे मैं ही नष्ट कर सकता हूँ। जो मैंने खड़ा किया है उसे मैं ही ध्वस्त भी कर सकता हूँ। अतः अपने पैर पर खड़े हो, बहादुर बनो, दृढ़ बनो तथा अपनी सारी जिम्मेदारी अपने कन्धों पर लो और जानों कि अपने भाग्य के निर्माता तुम स्वयं हो। समस्त शक्तियाँ और सफलताएँ तुम्हारे भीतर हैं। भूत यदि गरिमामय नहीं रहा तो इसकी चिंता मत करो। मरे हुए भूत को भूत के हवाले दफन के लिए छोड़ दो। अनन्त भविष्य तुम्हारे सामने है और तुम्हें सदैव स्मरण रखना होगा कि प्रत्येक शब्द, प्रत्येक विचार और प्रत्येक कर्म तुम्हारे लिए संग्रहित रहेगा। जैसे बुरे विचार और कर्म खूंखार शेर की भाँति तुम पर झपटने के लिए सदा आतुर रहेंगे, वैसे ही अच्छे विचार और कर्मों की शक्ति भी हजारों देवदूतों के समान तुम्हारी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहेगी।"

इस तरह स्वामी जी युवाओं को अपनी जिम्मेदारी स्वयं लेने का आह्वान करते हैं और इसमें निहित आत्म शक्ति के जागरण का मर्म बोध करवाते हुए उद्बोधन करते हैं– "तभी व्यक्ति का श्रेष्ठतम स्वरूप उभर कर आता है, जब वह अपने दायित्व के प्रति पूर्णरूप से जिम्मेदारी का बोध करता है। जब हमारे सामने कोई भूत–प्रेत दोष देने के लिए नहीं है, कोई देवता हमारा बोझ उठाने वाला नहीं है, तब हम स्वयं अकेले ही जिम्मेदार होते हैं, तभी हम अपने श्रेष्ठतम रूप में सामने आते हैं और अपनी सम्भावनाओं के उच्चतम शिखरों की ओर आरोहण करते हैं।"

इस तरह स्वामी जी युवाओं में उत्तरदायित्व का बोध जगाकर सहज ही उनके आध्यात्मिक जागरण एवं चरित्र गठन की ठोस पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। यह बोध जहाँ युवाओं को अवाँछनीय विचारों और कर्मों से बचाता है, वहीं उनको श्रेष्ठ चिंतन व आचरण के लिए प्रेरित करता है और अपने भाग्य निर्माता आप होने का एक नया विश्वास जगाता है। इसके साथ ही युवाओं के चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व गठन की आध्यात्मिक प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

स्वामी जी के शब्दों में– व्यक्ति का चरित्र और कुछ नहीं बल्कि उसकी आदतों और वृत्तियों का सार भर है। हमारी आदतें और वृत्तियां ही हमारे चरित्र का स्वरूप निर्धारित करती है। वृत्तियों की श्रेष्ठता और निकृष्टता के अनुरूप ही चरित्र की सबलता और निर्बलता सुनिश्चित होती है। श्रेष्ठ चिंतन और आचरण के सतत् अभ्यास द्वारा वृत्तियों का शोधन होता है और चरित्र गठन का कार्य मनोवांछित दिशा में आगे बढ़ता है।

वास्तव में आध्यात्मिक पूर्णता की अनन्तता एवं असीमता को इस सानन्त एवं ससीम जीवन में मूर्त रूप देने का दुस्साहस भरा प्रयास – पुरूषार्थ ही चरित्र का गठन का मर्म है। स्वामी जी के शब्दों में इससे कम नैतिकता या आदर्श के मार्ग को अपनाना सम्भव भी नहीं है। इससे कम में युवाओं के हृदय को उद्वेलित कर रहे प्रश्नों का यथार्थ समाधान भी सम्भव नहीं है। क्योंकि कोरे उपयोगितावादी आधार पर किसी तरह नैतिकता की व्याख्या सम्भव नहीं है। क्योंकि उपयोगितावादी दर्शन मात्र अपने सुख और स्वार्थ को देखता है। इसकी दृष्टि में सेवा, संयम

और त्याग का मार्ग प्रत्यक्षतः घाटे का ही सौदा जान पड़ता है। स्वामी जी इस संदर्भ में कटाक्ष करते हुए कहते है कि उपयोगितावादी अर्थात् भोगवादी दर्शन एक ओर तो अनन्त अर्थात् आध्यात्मिक पूर्णता के आदर्श को असम्भव मानता है तथा इसके लिए संघर्ष करने से रोकता है और दूसरी और नैतिकता की वकालत करता है; जो स्वामी के शब्दों में सम्भव नहीं है। बिना आध्यात्मिक आदर्श के नैतिक या अच्छा बनना स्वयं में लक्ष्य नहीं हो सकता। मात्र अनन्त की ओर अर्थात् अपनी आध्यात्मिक परिपूर्णता की ओर बढ़ने के जीवन आदर्श के आधार पर ही यथार्थ नैतिकता सम्भव है।

श्रेष्ठ चिंतन व आचरण के रूप में जिस चरित्र गठन का शुभारम्भ होता है, वही चित्तवृत्तियों के शोधन के साथ तप साधना का रूप ले लेता है। वृत्तियों के शोधन के साथ क्रमशः आत्मा में निहित शक्तियों का जागरण शुरू हो जाता है। इस क्रम में संयम, सहिष्णुता, नैतिकता व अन्य नीति–नियम, मार्ग के अनिवार्य सोपान बनते जाते हैं। अब युवाओं को अपने अनुत्तरित प्रश्नों के समाधान सहज ही मिलने लगते हैं। क्षणिक सुख का थोड़ा सा संयम आन्तरिक सशक्तता एवं आनन्द की एक गहरी अनुभूति देता है। स्वार्थ को थोड़ा सा त्याग, अन्दर गहरे संतोष का अनुभव बनता है। इसी क्रम में संयम, सहिष्णुता, उदारता, सेवा आदि सद्गुण जीवन के अभिन्न अंग बनते जाते हैं। जीवन में नैतिक नीति –नियमों का पालन बाह्य दबाव की बजाय अन्दर से स्फूर्त होने लगता है। जीवन के क्रियाकलाप बाहरी अनुशासन के बजाय आत्मानुशासन द्वारा संचालित होने लगते हैं।

अपने अन्दर दिव्यता की हल्की सी झलक भी युवा हृदय को अन्तर्निहित अपार सम्भावनाओं के प्रति आश्वस्त करती है और इसके साथ ही बाहर दूसरे व्यक्तियों एवं प्राणियों में भी इसकी झलक झाँकी प्रतिभासित होने लगती है। इसी बिन्दु पर स्वामी के अनुसार 'शिवभावे जीव सेवा' का रहस्य उद्घाटित होता है। स्वामी जी लिखते हैं कि– "इतनी तपस्या के बाद मैं इस वास्तविक सच्चाई को समझ पाया हूँ कि ईश्वर हर प्राणी में है। जो जीव सेवा करता है, वह ईश्वर सेवा करता है। जो इस प्रकट ईश्वर की सेवा नहीं कर सकते हो, उस अप्रकट ईश्वर की सेवा कैसे कर पाओगे। इसलिए वे कहते हैं कि प्रत्येक पुरूष, स्त्री और सभी प्राणियों को भगवान् के रूप में देखो। इनकी सेवा ही सर्वोच्च धर्म है।" आज के युवा यदि इन आदर्शों के अनुरूप अपना जीवन गढ़ने के लिए कटिबद्ध हो जायँ तो स्वामी जी के शब्दों में, फिर वे अधिक देर तक अन्धकार में नहीं भटकेंगे। आध्यात्मिक जीवन शैली के सतत् अभ्यास के साथ हमारे अन्तर से आत्म सूर्य का प्रकाश उदित होगा, जो शनैः–शनैः हमारे जीवन के अन्धेरे कोनों को प्रकाशित करेगा। इसी के साथ क्रमशः शक्ति का उद्भव होगा। जो अभी लड़खड़ा रहा है, वह धीरे–धीरे मजबूत होता जायेगा और शीघ्र ही वह दिन आयेगा जब सत्य हमारे दिलों –दिमाग पर इस कदर छा जायेगा कि वह हमारी धमनियों में से प्रवाहित होने लगेगा तथा हमारे जीवन से आचरण की भाषा में छलकने लगेगा।

उपर्युक्त आधार विकसित भारत 2047 के निर्माण की ओर इंगित करते हैं। जब युवा उच्च

आदर्शों, उद्देश्य की भावना और व्यापक ज्ञान से परिपूर्ण होते हैं, तो वे भलाई के लिए एक अजेय शक्ति बन जाते हैं। श्री बंडारू दत्तात्रेय लिखते हैं कि आज भारत ओजस्वी एवं यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी, सशक्त एवं कुशल नेतृत्व में अपने इतिहास के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है, इसलिए युवाओं को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। 21वीं सदी भारत की सदी होगी क्योंकि देश अपनी क्षमताओं के प्रति आश्वस्त होकर भविष्य की ओर तीव्रता से अग्रसर है। वर्ष 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र की सभी विशेषताओं के साथ 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। यह एक विकसित भारत होगा, जिसके लिए हमारे युवाओं को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, भारत ने चंद्रयान जैसे मिशनों के माध्यम से अंतरिक्ष अन्वेषण में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। भारत के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) ने आधार, UPI]AA स्टैक, COWIN प्लेटफॉर्म और GeM जैसी पहलों के साथ प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की अनुकरणीय राजनीति के तहत वैश्विक मान्यता प्राप्त की है, जो डिजिटल नवाचार के लिए देश की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। भारत एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनने की दिशा में प्रगति कर रहा है, और इसने सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से आईटी और गैर–आईटी डोमेन में वैश्विक प्रमुखता प्राप्त की है। राष्ट्र एक संपन्न स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का दावा करता है, जो 340 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक के संयुक्त मूल्यांकन के साथ 100 से अधिक यूनिकॉर्न की मेजबानी करता है, जो खुद को दुनिया के तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में स्थापित है।

अतः अमृत काल के दौरान आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं और सिद्धांतों कोआचरण में समाहित करना पड़ेगा। हम 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द की जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में इसलिए मनाते हैं ताकि हम स्वामी जी के आदर्शों और उनके दर्शन के लिए, जिनके लिए वे जिए और काम किए, वे भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत बन सकें। स्वामी जी के बताये रास्ते पर चलकर ही ''एक भारत सर्वश्रेष्ठ भारत" और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकेगा। उनका दृढ़ विश्वास था कि सभी रास्ते एक ही सच्चे ईश्वर तक जाते हैं, जैसा कि ऋग्वेद में भी उल्लेख किया गया है कि ''एकम् सत विप्रा बहुदा वदन्ति" (सत्य एक है, बुद्धिमान इसे विभिन्न नामों से बुलाते हैं।) युवाओं को संकल्प लेना होगा कि वे स्वामी जी की शिक्षाओं और सिद्धांतों के सार को राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति, विविधता में एकता, समावेशिता और पवित्रता को आत्मसात करें। यही स्वामी विवेकानन्द जी को हम सबकी तरफ से सच्ची श्रद्धांजलि होगी और 2047 तक विकसित भारत के निर्माण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

निष्कर्ष

समस्त तथ्यात्मक विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि जहाँ भारत सरकार 2047 तक

विकसित भारत की संकल्पना को लेकर प्रतिबद्ध है वहीं युवाओं की भूमिका ही अद्वितीय है और युवाओं के प्रेरणास्त्रोत स्वामी विवेकानन्द की वैचारिकी महत्वपूर्ण। स्वामी विवेकानन्द जी युवा वर्ग को अतीत की नींव के समान मानते हैं। अतीत की नींव के बिना सुदृढ़ भविष्य का निर्माण नहीं हो सकता। अतीत की जीवन शक्ति ग्रहण करके ही भविष्य जीवित रहता है। जिस आदर्श को लेकर राष्ट्र अब तक बचा हुआ है, उसी आदर्श की ओर वर्तमान युवा पीढ़ी को परिचालित करना होगा, ताकि वे देश के महान अतीत के साथ सामंजस्य बनाकर लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकें। स्वामी जी ने कहा है कि युवा वर्ग के सम्मुख एक लक्ष्य स्थापित करना होगा और इस ओर ध्यान देना होगा कि युवक उत्साह तथा प्रेरणा के साथ अपनी क्षमता का सदुपयोग कर सकें।

युवा शक्ति के भीतर जो सक्रियता एवं उद्दाम भावावेग देखने में आता है, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। वे कुछ करने को उत्सुक हैं और यह उसी का लक्षण है। उनके नेतृत्व का भार जिनके ऊपर है, उन वयस्क लोगों को इस विषय में सोचना होगा। युवकों को केवल निधि – निषेध की सीमा में आबद्ध न रखकर, उन्हें स्पष्ट मार्ग दिखाना होगा। इसीलिए तरूणों के प्रति स्वामीजी का आह्वान है – अपनी शक्ति को व्यर्थ बरबाद न होने देना। अतीत की ओर देखो, जिस अतीत ने तुम्हें अनंत जीवन रस प्रदान किया है, उससे पुष्ट हो। यदि अतीत की परम्परा का सदुपयोग कर सको, उसके लिए गौरव का बोध कर सको, तो फिर उसका अनुसरण कर अपना पथ निर्धारित करो। वह परम्परा तुम्हें दृढ़ नींव पर प्रतिष्ठित करेगी और इसके फलस्वरूप तुम देखोगे कि देश सामंजस्यपूर्ण समृद्धि की दिशा में अग्रसर हो रहा है।

इसी प्रकार अपेक्षाकृत अत्यल्प समय के भीतर लक्ष्य तक पहुँचा जा सकेगा। वैज्ञानिकगण नए–नए उपायों के खोज में तरह–तरह के परीक्षण– निरीक्षण किया करते हैं, परन्तु वे भी क्या उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त अतीत काल की प्रज्ञा पर निर्भर नहीं करते ? अणु का आविष्कार आकस्मिक रूप से नहीं हो गया। अनेक युगों के अनेक वैज्ञानिकों की जी–तोड़ खोजों के बाद अंततः वर्तमान शताब्दी में आण्विक शक्ति के अस्तित्व का पता चला है। उसी प्रकार इस क्षेत्र में भी हमें अपने पूर्ववर्तियों के प्रयास को स्मरण रखना होगा।

स्वामी जी ने यह भी बताया है कि उन्नति की प्रथम सीढ़ी स्वाधीनता है। स्वाधीनता के अभाव में हम बद्ध हो जाते हैं और इससे क्रमशः हमारा विनाश अवश्यंभावी हो जाता है। इसीलिए युवकों को पूर्ण स्वाधीनता देनी होगी, परन्तु इसके साथ ही उनके पथ के निर्धारण में सहायता भी करनी होगी, साथ ही युवकों को केवल स्वामी जी की यह चेतावनी याद रखने की आवश्यकता है कि वे युगों से संचित अनुभवों के भंडार से दृष्टांत लेकर लाभ उठाएँ और भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा का संचार करें तथा सही मायने में यही स्वामी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी और इस महान उत्तराधिकार को स्वीकार करना युवाओं का परम सौभाग्य।

संदर्भ ग्रन्थ

- अवस्थी एवं अवस्थी, (2004) 'आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन',

रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

- दत्तात्रेय, श्री बंडारू (2024) ''विकसित भारत /2047 के राष्ट्र कल्याण के लक्ष्य को साकार करने में युवा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाये।"
- त्यागी, रूचि एवं रामरत्न, (2003) "भारतीय राजनीतिक चिन्तन", मयूर पेपर बैक्स, नई दिल्ली
- पोतदार, बसंत, (2012) 'योद्धा सन्यासी विवेकानन्द', प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली
- मुखर्जी, मणिशंकर, (2020) "विवेकानन्द की आत्मकथा", प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
- शर्मा, ओम प्रकाश, (1989)'स्वामी विवेकानन्द', साहित्य केन्द्र प्रकाशन, नई दिल्ली
- शर्मा, योगेश कुमार, 'भारतीय राजनीतिक चिन्तक', कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2001
- स्वामी, विदेहात्मानन्द, (1996) "युगनायक विवेकानन्द", भाग संख्या 122 एवं 125, श्री राम कृष्ण मठ, नागपुर